रूपरेखा

शोध विषय : **“कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में चित्रित नारी”**

प्रथम अध्याय : नारी की अवधारणा : अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप

1.0 प्रस्तावना

1.1 नारी की अवधारणा, अर्थ, परिभाषा

1.2 नारी का स्वरूप

1.3 भारतीय दृष्टिकोण

1.4 पाश्चात्य दृष्टिकोण

द्वितीय अध्याय: समकालीन महिला कथाकारों की परंपरा और कृष्णा सोबती

2.0 प्रस्तावना

2.1 हिन्दी साहित्य के संदर्भ में समकालीनता की अवधारणा

2.2 हिंदी साहित्य में महिला कथा लेखन की परंपरा

2.3 कृष्णा सोबती और समकालीन प्रमुख महिला कथाकार

2.3.1 मृदुला गर्ग

2.3.2 सूर्यबाला

2.3.3 मंजुल भगत

2.3.4 निरुपमा सेवती

2.3.5 राजी सेठ

2.3.6 मन्नु भंडारी

2.3.7 चित्रा मुदगल

2.3.8 शिवानी

2.3.9 प्रभा खेतान

2.3.10 शशिप्रभा शास्त्री

2.3.11 मालती जोशी

2.3.12 दीप्ति खंडेलवाल

2.4 समकालीन महिला कथा लेखन में कृष्णा सोबती का योगदान

तृतीय अध्याय: कृष्णा सोबती के कथा साहित्य का कथ्यात्मक विश्लेषण

3.0 प्रस्तावना

3.1 कृष्णा सोबती के उपन्यासों का वस्तु विवेचन

3.2 कृष्णा सोबती के कहानियों का वस्तु विवेचन

चतुर्थ अध्याय : कृष्णा सोबती के उपन्यासों में चित्रित नारी

4.0 प्रस्तावना

4.1 माँ के रूप में चित्रित नारी

4.2 पत्नि के रूप में चित्रित नारी

4.3 बहन के रूप में चित्रित नारी

4.4 बेटी के रूप में चित्रित नारी

4.5 सास के रूप में चित्रित नारी

4.6 बहु के रूप में चित्रित नारी

4.7 विधवा के रूप में चित्रित नारी

4.8 सौतन के रूप में चित्रित नारी

4.9 वेश्या के रूप में चित्रित नारी

4.10 वृद्धा के रूप में चित्रित नारी

4.11 प्रेमिका के रूप में चित्रित नारी

4.12 विद्रोही के रूप में चित्रित नारी

4.13 अकेली स्त्री के रूप में चित्रित नारी

4.14 नौकरीपेशा नारी का चित्रण

पंचम अध्याय: कृष्णा सोबती के कहानियों में चित्रित नारी

5.0 प्रस्तावना

5.1 माँ के रूप में चित्रित नारी

5.2 पत्नि के रूप में चित्रित नारी

5.3 बहन के रूप में चित्रित नारी

5.4 बेटी के रूप में चित्रित नारी

5.5 सास के रूप में चित्रित नारी

5.6 बहु के रूप में चित्रित नारी

5.7 विधवा के रूप में चित्रित नारी

5.8 सौतन के रूप में चित्रित नारी

5.9 वेश्या के रूप में चित्रित नारी

5.10 वृद्धा के रूप में चित्रित नारी

5.11 प्रेमिका के रूप में चित्रित नारी

5.12 विद्रोही के रूप में चित्रित नारी

5.13 अकेली स्त्री के रूप में चित्रित नारी

5.14 नौकरीपेशा नारी का चित्रण

छठा अध्याय: कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में भाषा शैली

उपसंहार

परिशिष्ट

संदर्भ ग्रंथ सूची

“कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में चित्रित नारी”

प्रस्तावना :

हिंदी साहित्य जगत में अपने कलम के माध्यम से तहलका मचानेवाली महिला लेखिका को कौन नहीं जानता ? उपन्यासकार कृष्णा सोबती जी शुरू में अपना साहित्यिक लेखन जीवन का आरंभ कविताओं से किया था। तदोपरांत अपनी कलम उन्होंने कथा लेखन में चलायी और उसमें महोन्नति भी हासिल की। जिस विषय को भी उन्होंने सामने रखा पूर्णतया उस में खुलापन हमें नजर आता है और साथ ही साथ औपचारिकता के सिवाय सत्य के निकट में रही सोबती जी का समृद्ध शब्द भंडार युक्त साहित्य हर एक पन्नों पर छलकता हुआ नजर आता है। कथा, कविता, उपन्यास आदि में वह सफ़ल रही है। स्त्री की दशा एवं दिशा को दिखलाने का घनघोर प्रयास उनके साहित्य में अतीव दिखाई देता है।

अपने लेखन में नारी के पात्र को बखूबी खुले पन से उन्होंने पाठकों के सामने रखा है। इसमें उनका साहस और उपलब्धि अद्वितीय है। पंजाब प्रदेश की संस्कृति को ज्यादातर उन्होंने अपनी लेखनी में विशिष्ट चित्रण के रूप में दिखाया है। यह हमारा समाज पुरुष प्रधान समाज है यहाँ पर नारी को बोलना, सोचना, कुछ करना, ऐसा सैद्धांतिक अधिकार तो है ही, परंतु सामाजिक अधिकार नहीं है। समाज उसे लताड़ता रहता है।नारी अपनी अस्मिता को बनाए रखने के लिए अपने अस्तित्व को हमेशा कायम रखने के लिए समाज में पुरुष के सामने अपना दर्जा पाने के लिए हमेशा से प्रयास करते हुए आ रही है। कृष्णा सोबती जी ने अपने कथा साहित्य में नारी को आगे रखा, समाज में संघर्ष करती हुई नारी को दिखाया, समस्याओं से घिरी हुई पारिवारिक नारी को भी दिखाया, और उसमें वे सफल भी हुई। कृष्णा सोबती जी के नारी पात्र जुझारू, आत्म

सम्मान और हालातों में बंधी हुई परिस्थितियों से लड़ने वाली, जूझने वाली सहज रूपी औरत को आगे बढ़ने के लिए किस तरह से प्रयास करना होता है, कैसे संघर्षों से लड़ना होता है, कैसा अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए लड़ती है, उन सारी चीजों को अपनी लेखनी में ले आकर जीवंत रूप देकर पाठकों तक पहुँचाने का सफल प्रयास किया है।

शोध का उद्देश्य :

हमारे जीवन की प्रति रूपी अगर कोई छाया है तो वह है साहित्य। साहित्य मानव जीवन में जो घटित होता है उन सबसे रूबरू करवाने वाली कड़ी ही तो साहित्य है। साहित्य गद्य विधाओं में कथा और उपन्यास बहुत ही महत्वपूर्ण विधाएं हैं। हिंदी साहित्य जगत में समकालीन महिला कथा कारों का चर्चा अगर हम करेंगे तो विशेष रूप से कृष्णा सोबती जी का नाम भी प्रथमतः पाएंगे। कृष्णा सोबती जी अन्य महिला कथाकारों से विभिन्न इसलिए है कि उन्होंने अपनी कृतियों में दबी कुचली,पीड़ित, शोषित, विद्रोही तथा स्वच्छंद नारियों का चित्रण समाज के सामने हू-ब-हू कराने का प्रयास किया है।

सोबती जी की कहानी तथा उपन्यासों को तीन प्रकार के रूप से हम देख सकते हैं। उन्होंने प्रेम, स्त्री पुरुष संबंधों और देश प्रेम से संबंधित कहानियाँ लिखी है। यह नई कहानियों की भी एक विशेष प्रवृत्ति रही है। इनकी कहानियों में रूमानी पन अधिक मिलता है। दूसरे वर्ग की कहानियों में स्त्री की यातना और पीड़ा उनको सामाजिक स्तर पर चित्रित करने का प्रयास किया है। तीसरे वर्ग में देश विभाजन और सांप्रदायिकता से संबंधित त्रासदी,यातना और विडंबनाओं का चित्रण देखने को मिलता है। भारतीय समाज परंपरागत विचारों का एक पोषक समाज है। आज भी परंपरागत विचारों का दामन थामे हुए है। इसके परिणाम स्वरूप समाज के आगे नारी को घुटने

टेकने पढ़ते हैं। कहीं कहीं यदि वह सामाजिक परंपराओं से टकराने का प्रयास करती है तो स्वयं में टूट टूट कर जीना होता है।

आज नारी सजीव एवं जागरूक अवश्य है परंतु परंपरागत जंजीरों को तोड़ने के लिए और अधिक सदृढ़ बनने की आवश्यकता है। उनका यह विरोध स्थितियों के अनुसार सीमाओं को लांग भी पाया है और सीमाओं के भीतर भी है। नारी को बचपन में माता - पिता के अधीन, जवानी में पति के अधीन, बुढ़ापे में संतानों के अधीन रहना पड़ता है। कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में नारी का रूप कई जगहों में हम देख सकते हैं। अपनी सारी रचनाओं में नारी एवं परंपरा का चित्र बड़ी स्वाभाविकता से किया है। परंपरा और रूढ़ियों को तोड़ते हुए अपने लेखन के माध्यम से स्त्री के अस्मिता को बनाए रखने का उद्देश्य हम खुलकर देख सकते हैं। पुरुष प्रधान समाज में नारी का स्थान मान सही तरीके से सभी समझे यही हमारे अध्ययन का महत्व तथा मूल उद्देश्य है।

प्रथम अध्याय : नारी की अवधारणा : अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप

नारी की अवधारणा एक जटिल तथा बहु आयामी विषय है।**"भरतीय नारी सर्वगुण संपन्न है। दया उत्साह, त्याग, सौंदर्य,क्षमता की प्रतीक है।** नारी की अवधारणा को जानते हुए नारी का अर्थ तथा कई विद्वानों ने नारी को लेकर किस तरह से अपना मत व्यक्त करते हुए परिभाषित किया है और उसका स्वरूप क्या है और भारतीय तथा पाश्चात्य दृष्टिकोण में नारी का क्या रूप है इन सभी बिंदुओं का अधयन हम इस अध्याय में करेंगे ।

द्वितीय अध्याय: समकालीन महिला कथाकारों की परंपरा और कृष्णा सोबती

कृष्णा सोबती के साथ - साथ उनकी समकालीन महिला कथाकारों ने नारी को किस तरह अपने लेखन के माध्यम से साहित्य में बिम्बित किया है उसको जानते हुए महिला कथाकारों की

साहित्य की जानकारी प्राप्त करते हुए तुलनात्मक अध्ययन हम यहाँ पर इस द्वितिय अध्याय में करेंगे तथा कृष्णा सोबती जी का साहित्य में योगदान क्या है वह भी जानेंगे।

तृतीय अध्याय: कृष्णा सोबती के कथा साहित्य का कथ्यात्मक विश्लेषण

कृष्णा सोबती के कथा साहित्य का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष नारी चेतना और स्त्री सशक्तिकरण है। कृष्णा सोबती जी ने अपने लेखन के माध्यम से सामाजिक यथार्थ, स्त्री चेतना, प्रेम, स्वतंत्रता और ऐतिहासिक संदर्भों को गहराई से चित्रित किया है। उनके उपन्यासों का कहानियों का वस्तु विवेचन हम इस अध्याय में करेंगे।

चतुर्थ अध्याय : कृष्णा सोबती के उपन्यासों में चित्रित नारी

माँ ,पत्नि, बहन,बेटी,सास,बहु विधवा सौतन वेश्या वृद्धा प्रेमिका के रूप में चित्रित नारी के कई रूपों के बारे में हम इस अध्याय में जानकारी हासिल करेंगे।

पंचम अध्याय: कृष्णा सोबती के कहानियों में चित्रित नारी

अकेलेपन का संघर्ष, विधवा संघर्ष, वेशा जीवन का संघर्ष, प्रेम विवाह, सफल प्रेम, विवाहोत्तर प्रेम संबंधी नारी संघर्ष आदि नारी पात्र कृष्णा सोबती जी के साहित्य में उपस्थित है। माँ ,पत्नि, बहन,बेटी,सास,बहु आदि नारी के भाव युक्त संघर्षमय जीवन के बारे में नारी के कई पात्रों का दर्शन हमें इस अध्याय में मिलेगा।

छठा अध्याय: कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में भाषा शैली

सोबती जी ने अपने साहित्य में कुछ खास शब्दों का प्रयोग करते हुए अपने छवि को अलग ही तरीके से दर्शाया है। पंजाब पृष्ठ भूमी पर आधारित उनकी भाषा शैली वाचकों की अभिरुची को

बढाने का कार्य करती है । कृष्णा सोबती जी की साहित्यिक भाषा शैली के बारे में हम इस अध्याय में अवगत होंगे।

शोध की उपलब्धियाँ :

शोध यह एक सतत परिश्रम का फ़ल होता है। ज्ञानार्जन करते करते खुद में एक आत्म विश्वास इसी से जाग जाता है। लेखिका कृष्णा सोबती जी ने अपने साहित्य में नारी के हर पहलुओं को चित्रित किया है। साहित्य समाज के लिए बहुमुख्य हैं। इंसान सामाजिक प्राणी हैं समाज के हर गतिविधियों में उसके बर्ताव को दिखाने का काम साहित्य करता है ऐसे साहित्य में कई सारे लेखक लेखिकाओं ने अपना योगदान देकर समाज को सुधारने का तथा समाज में निहित कमियों को अच्छाईयों को दर्शाते हुए कल चलाया है। ऐसे ही हिंदी साहित्य के जगत में ग्यारहवीं ज्ञानपीठ पुरस्कृत कृष्णा सोबती जी का साहित्यिक योगदान बहुमूल्य तथा सदुपयोगी है। ऐसे महान हस्ती के साहित्य का अध्ययन चिंतन मनन करने का एक अवसर मुझे मिला है मेरे शोध कार्य में उनका साहित्य मुझे हर तरह से मजबूत बनाने का एक कड़ी है और शोध के माध्यम से नए प्रकारों को सीखने का एक अवसर प्राप्त हुआ है वही मेरा सौभाग्य है। तथा
शोध साहित्य को उजागर कर उसे प्रकाश में लाना और हर तरीकी से बारीकीयों को जानते हुए शोध में एक नई खोज की उपलब्धि पाना ही मेरा लक्ष्य है।

आधार ग्रंथ सूची

- स्त्री संघर्ष का इतिहास - राधा कुमार -प्रकाशन वर्ष 2002 - वाणी प्रकाशन नई दिल्ली
- कृष्णा सोबती के कथा साहित्य मे चित्रित ग्रामीण जीवन - डॉ सौ. सुरेखा लक्ष्मण तांबे- प्रकाशन वर्ष - 2011- पूजा पब्लिकेशन, कानपुर
- कृष्णा सोबती के उपान्यासो मे मध्यवर्ग - डॉ शशि पालिवाल- प्रकाशन वर्ष -2014 - निखिल पब्लिशर्स ऑड डिस्ट्रीब्यूटर्स, आग्रा
- हिंदी की महिला साहित्यकार - सं. सत्य प्रकाश मिलिंद - प्रकाशन वर्ष - 2018- अन्यन्य प्रकाशन, दिल्ली
- स्त्री संघर्ष संवेदना के साक्ष्य कल्याणी डाकोरे -प्रकाशन वर्ष- 2018 विनय प्रकाशन कानपुर
- नारी संघर्ष -डॉ. ममता एच. शिरगंबी -प्रकाशन वर्ष -2020 विनय प्रकाशन कानपूर
- नारीवादी आलोचना-किंगसन सिंह पटेल- प्रकाशन वर्ष-2021अनन्य प्रकाशन पेपर बैक्स दिल्ली
- स्त्री दर्पण-गरिमा श्रीवस्तव- प्रकाशन वर्ष 2021-अनन्य प्रकाशन पेपर बैक्स दिल्ली
- स्त्री समस्या गरिमा श्रीवस्तव- प्रकाशन वर्ष 2021-अनन्य प्रकाशन पेपर बैक्स दिल्ली
- स्त्री अस्मिता की खोज - हिसाए कोमात्सु- प्रकाशन वर्ष-2021-नयी किताब प्रकाशन नवीन शाहदरा पेपर बैक्स दिल्ली